हिंदी
सुलभभारती
पाँचवीं कक्षा

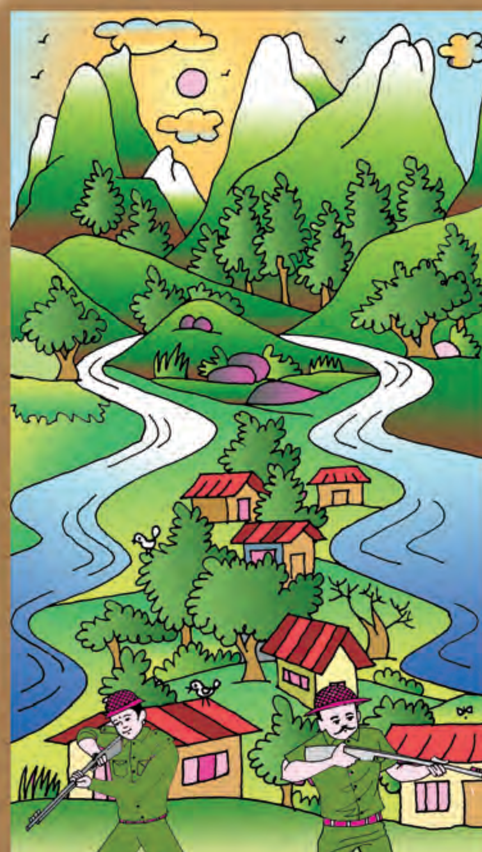

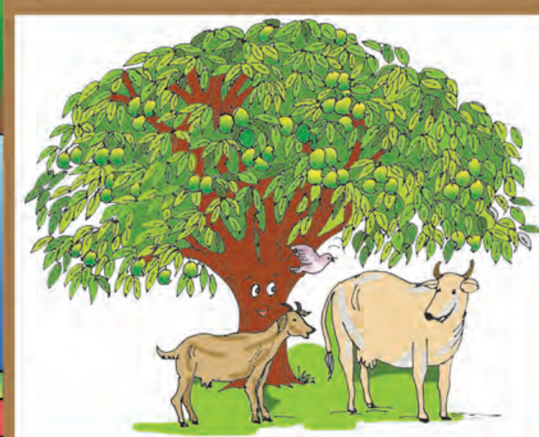

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

दो शब्द

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु दो भागों में विभाजित करते हुए उसका 'सरल से कठिन की ओर' क्रम रखा गया है । यहाँ विद्यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण- संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ भाषा प्रयोग और व्यावहारिक सृजन पर विशेष बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्यपुस्तक में आए शब्दों और वाक्यों की रचना हिंदी की व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर की गई है । इसमें क्रमिक एवं श्रेणीबद्ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, अभ्यास और उपक्रम भी दिए गए हैं । विद्यार्थियों के लिए लयात्मक कविता, बालगीत, कहानी, संवाद आदि विषयों के साथ-साथ चित्रवाचन, देखो और सुनो, पढ़ो, देखो और बनाओ, देखो और करो, समझो, अनुरेखन, अनुलेखन, सुलेखन, श्रुतलेखन आदि कृतियाँ भी दी गई हैं ।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने के पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक में दिए गए 'शब्दार्थ' का उपयोग करें । 'पहचान हमारी' के सभी भागों में नीचे दिए गए 'पढ़ो' के शब्दों के अर्थ बताना अपेक्षित नहीं है । लयात्मक, ध्वन्यात्मक शब्दों का अपेक्षित उच्चारण एवं दृढ़ीकरण करना आवश्यक है । इस पाठ्यपुस्तक में लोक प्रचलित तद्भव शब्दों का प्रयोग किया गया है । इनसे विद्यार्थी सहज रूप में परिचित और अभ्यस्त होते हैं । इनके माध्यम से मानक शब्दावली का अभ्यास करना सरल हो जाता है ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक के माध्यम से जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास का अवसर विद्यार्थियों को प्रदान करें । पाठ्यसामग्री का मूल्यांकन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है इससे विद्यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे । पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन, कार्यात्मक व्याकरण (भाषा प्रयोग) और व्यावहारिक सृजन का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे ।

शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक: प्राशिसं/२०१४-१५/८५४३/ह/भाषा/मंजूरी/ड-५०५/३४२ दिनांक :- १९/०१/२०१५

हिंदी
सुलभभारती
पाँचवीं कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

मेरा नाम ________________ है ।

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

JCMQ7H

प्रथमावृत्ति : २०१५
छठवाँ पुनर्मुद्रण :२०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

हिंदी भाषा समिति

डॉ. चंद्रदेव कवडे-अध्यक्ष, डॉ. हेमचंद्र वैद्य-सदस्य,
डॉ. साधना शाह-सदस्य, श्री रामनयन दुबे-सदस्य,
श्री रामहित यादव-सदस्य, श्री कौशल पांडेय-सदस्य,
प्रा. मैनोद्दीन मुल्ला-सदस्य,
डॉ. अलका पोतदार-सदस्य-सचिव

हिंदी भाषा कार्यगट

डॉ. रामजी तिवारी, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे,
प्रा. अनुया दळवी, श्री संजय भारद्वाज,
डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र, डॉ. दयानंद तिवारी,
श्री अनुराग त्रिपाठी, श्री राजेंद्रप्रसाद तिवारी,
श्री उमाकांत त्रिपाठी, प्रा. निशा बाहेकर,
डॉ. आशा मिश्रा, डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर,
श्रीमती मंगला पवार, श्री नरसिंह तिवारी

संयोजन :
डॉ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

संयोजन सहायक :
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : राजेश लवळेकर

चित्रांकन : लीना माणकीकर, राजेश लवळेकर,
मंगेश किरवडकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री संदीप आजगांवकर, निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव

मुद्रणादेश :N/PB/2021-22/Qty. 0.00

मुद्रक : M/s

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी, नियंत्रक,
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई-२५

प्रस्तावना

'बच्चों का निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९ और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप -२००५' दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या-२०१२' तैयार की गई । इस पाठ्यचर्या पर आधारित हिंदी द्वितीय भाषा (संपूर्ण) 'सुलभभारती' की पाठ्यपुस्तक 'मंडळ' प्रकाशित कर रहा है । पाँचवीं कक्षा की यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें विशेष आनंद हो रहा है ।

हिंदीतर विद्यालयों में पाँचवीं कक्षा हिंदी शिक्षा का प्रथम सोपान है । पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया सहज-सरल बनाने के लिए इस बात का ध्यान रखा गया है कि यह पुस्तक चित्ताकर्षक, चित्रमय, कृतिप्रधान और बालस्नेही हो । विद्यार्थियों की अभिरुचि को ध्यान में रखकर हिंदी भाषा शिक्षा मनोरंजक एवं आनंददायी बनाने के लिए योग्य बालगीत, कविता, चित्रकथा और रंगीन चित्रों का समावेश किया गया है । पाठ्यपुस्तक में अन्य विषयों को भाषाई दृष्टि से समाविष्ट किया गया है । इन घटकों के अध्यापन के समय विद्यार्थियों के लिए अध्ययन-अनुभव के नियोजन में शालाबाह्य जगत एवं दैनिक व्यवहार से जुड़ी बातों को जोड़ने का प्रयास किया गया है । व्याकरण को भाषा प्रयोग के रूप में दिया गया है ।

शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए सूचनाएँ 'दो शब्द' तथा प्रत्येक पृष्ठ पर दी गई हैं । अध्ययन-अध्यापन की प्रकिया में ये सूचनाएँ निश्चित उपयोगी होंगी ।

हिंदी भाषा समिति, कार्यगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है । पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध भागों से आमंत्रित शिक्षकों, विशेषज्ञों द्वारा पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । समीक्षकों की सूचना और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है । 'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, कार्यगट, समीक्षकों, चित्रकारों तथा गुणवत्ता परीक्षक डॉ. प्रमोद शुक्ल के प्रति हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

पुणे
दिनांक :-
२० दिसंबर २०१४
मार्गशीर्ष कृ. १३
शके १९३६

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

हिंदी अध्ययन निष्पत्ति : पाँचवीं कक्षा (सुलभभारती)

अध्ययन के लिए सुझाई हुई शैक्षणिक प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति
सभी विद्यार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम विद्यार्थियों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाएँ, ताकि उन्हें – • विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं, अनुभवों, कहानियों, कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में (मौखिक/लिखित/सांकेतिक रूप से) कहने-सुनाने/प्रश्न पूछने, टिप्पणी करने, अपनी राय देने की आजादी हो । • पुस्तकालय/कक्षा में अलग-अलग तरह की कहानियाँ, कविताएँ अथवा/बाल साहित्य, स्तरानुसार सामग्री, साइन-बोर्ड, होर्डिंग, समाचार पत्र की कतरने उनके आसपास के परिवेश में उपलब्ध हों और उन पर चर्चा करने के मौके हों । • तरह-तरह की कहानी, कविताओं, पोस्टर आदि को संदर्भ के अनुसार पढ़कर समझने-समझाने के अवसर उपलब्ध हों । • सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों। • जरूरत और संदर्भ के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका प्रयोग करने के अवसर हों । • एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, उसमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से लिखने के अवसर हों । • आसपास होने वाली गतिविधियों/घटने वाली घटनाओं को लेकर प्रश्न करने, विद्यार्थियों से बातचीत या चर्चा करने, टिप्पणी करने, राय देने के अवसर उपलब्ध हों । • विषयवस्तु के संदर्भ में भाषा की बारीकियों और उसकी नियमबद्ध प्रकृति को समझने और उनका प्रयोग करने के अवसर हों । • नए शब्दों को चित्र शब्दकोश/शब्दकोश में देखने के अवसर उपलब्ध हों । • अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि । (जैसे – गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार प्रयोग करने के अवसर हों । • पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील मुद्दों को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों ।	**विद्यार्थी –** 05.15.01 अपने आसपास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उनपर मौखिक रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं । 05.15.02 विविध प्रकार की सामग्री (समाचार पत्र, बाल साहित्य, पोस्टर आदि) में आए संवेदनशील बिंदुओं पर (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं । 05.15.03 विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (सूचना फलक पर लगाई जाने वाली सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट, जानकारी आदि प्राप्त करने के लिए) के लिए पढ़ते और लिखते हैं । 05.15.04 सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि) की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं । 05.15.05 अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजते हैं । 05.15.06 अंग्रेजी शब्दों/वाक्यों का देवनागरी में लिप्यंतरण करते है । 05.15.07 देवनागरी में लिखे शब्दों/वाक्यों का अंग्रेजी में लिप्यंतरण करते हैं । 05.15.08 मुहावरे-कहावतों का अपनी बोलचाल तथा लेखन में सार्थक प्रयोग करते हैं । 05.15.09 भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते हैं और उसे अपने लेखन में/ब्रेल लिपि में शामिल करते हैं । 05.15.10 भाषा की व्याकरणिक इकाइयों (जैसे – कारक-चिह्न, क्रिया, काल, विलोम आदि) की पहचान करते हैं और उनके प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं । 05.15.11 विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विरामचिह्नों जैसे – पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, उद्धरण चिह्न का सचेत प्रयोग करते हैं । 05.15.12 अपने आसपास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उनपर लिखित रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं । 05.15.13 उद्देश्य और संदर्भ के अनुसार शब्दों, वाक्यों, विरामचिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए लिखते हैं । 05.15.14 पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए संवेदनशील बिंदुओं पर लिखित में/ब्रेल लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं । 05.15.15 अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं । कविता, कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं ।

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
	✻ आओ खेलें	१
१.	नंदनवन	२,३
२.	बूँदें	४
३.	योग्य चुनाव	५
४.	कश्मीरा	७
५.	पहचान हमारी- भाग (१)	८,९
६.	पेटूराम	१०
७.	बधाई कार्ड	११
८.	करो और जानो	१२
९.	नीम	१३

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१०.	गड़ा धन	१४
११.	मित्रता	१६
१२.	बचत	१७
१३.	पहचान हमारी- भाग (२)	१८,१९
१४.	मैं सड़क हूँ	२०
१५.	व्यायाम	२१
१६.	बोलो और जानो	२२
	✻ स्वयं अध्ययन	२३
	✻ पुनरावर्तन १,२	२४,२५

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	गाँव और शहर	२६,२७
२.	जीवन	२८
३.	भाई-भाई का प्रेम	२९
४.	बालिका दिवस	३१
५.	रोबोट	३२
६.	जुड़ें हम	३३,३४
७.	(अ) बोध	३५
	(ब) समान - विरुद्ध	३६
८.	बीज	३७
९.	मुझे पहचानो	३८
१०.	मुझे जानो	३९

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
११.	वीरों को प्रणाम	४०
१२.	सपूत	४१
१३.	राष्ट्रीय त्योहार	४३
१४.	(अ) हम अलग - रूप एक	४४
	(ब) छुक-छुक गाड़ी	४५
१५.	ज्ञानी	४६
१६.	बचाव	४७
१७.	निरीक्षण	४८
१८.	चलो-चलें	४९
	✻ स्वयं अध्ययन	५०
	✻ पुनरावर्तन ३,४	५१,५२
	✻ शब्दार्थ, शब्द पहेली, उत्तर	५३,५४

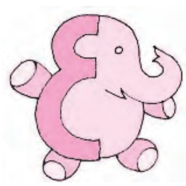

● **पहचानो और बताओ :**

✵ आओ खेलें

❑ **अध्यापन संकेत :** विद्‌यार्थियों से पूछें कि वे कौन-से खेल खेलते हैं । चित्रों का निरीक्षण करवाकर उनपर चर्चा कराएँ । प्रत्येक विद्‌यार्थी को बोलने का अवसर दें । उनके पूर्वानुभव की जानकारी प्राप्त करें, इससे अध्ययन-अनुभव में सहायता मिलेगी ।